सम्पादक के नाम

तो यह लव मैरिज है

शादी के शपथ पत्र को पढ़ते हुए पता चला अंतर जातीय विवाह है। लड़के से पूछा, अरेंज है या लव मैरिज ? लड़के ने कहा अरेंज लव मैरिज है।

फिर पूछा मतलब घर वालों की रजामंदी है ? तो थोड़ी देर चुप्पी छाई रही फिर लड़का बोला मेरे घरवाले तो राजी हैं। यह एकतरफा है।

"तो यह लव मैरिज है. खुलकर क्यों नही कहते लव मैरिज कर रहे ?" दोनों चुप है। उनके दिमाग में कुछ और चल रहा था। शादी का उल्लास नही था. किसी लड़ाई में लग रहे थे।

लड़का लड़की दोनों डॉक्टर हैं।

लड़की से पूछा, तुम्हारे पिता क्यों नहीं राजी ? लड़की बोली, पिता अब इस दुनिया में नहीं रहे। मां पर मामा का जोर है। मामा नहीं चाहते कि मैं इनसे शादी करूं। वह अपनी जाति में ही शादी करने के लिए कह रहे हैं।"

फिर मैंने पूछा आज तुम्हारे साथ कौन-कौन आया है ? लड़की चुप हो गई। पता चला कि लड़की के घर से तो कोई आया ही नहीं और जो मित्र थे उन्हें छुट्टी नहीं मिल सकी। लड़के की मां थी, भाई था और दो दोस्त थे। थोड़ी देर के बाद मैंने लड़के से कहा, तो शादी करना चाह रहे हो ?" अभी तक चुप बैठी लड़के की मां अचानक बोल पड़ी, यह थोड़ी चाह रहा है शादी करना। यह लड़की शादी कर रही है।"

एक भीतर बैठा हुआ गुस्सा था वह निकल आया। असहमति को सहमति करने में असफल हुए लड़के के चेहरे पर तनाव और उदासी छा गई। शादी के मौके पर दोनों कितने अकेले पड़ गए। अपनी शादी के लिए परिवार की मर्जी हासिल नही कर सके उस वक्त में लड़की वैसे ही अकेली थी। घरवालों के विरोध के बावजूद शादी कर रही थी, उस पर होने वाली सास का यह व्यवहार उसे कितना अकेला कर रहा होगा, यही सोच रहा था कि मैंने कहा कर दें साइन ? लड़की ने हां कहा। फिर मैंने कहा, तुम्हारी तरफ से मैं हूं. कोई तकलीफ दे तो बताना।

- कैलाश वानखेड़े

पुरुष ही स्त्री को 'सीता' और 'शूर्पणखा' सिद्ध करता है

सीता देवी इसलिए कि उसने सारे अन्याय बिना प्रतिरोध के सह लिए और शूर्पणखा राक्षसी इसलिए कि उसने अपने प्रेम का इजहार कर दिया। सारे मानक पुरुषों के... सारे आदर्श पुरुषों द्वारा स्थापित और मूर्ख स्त्रियाँ उन्हीं आदर्शों और मानकों को मानकर लकीर की फकीर हो रही हैं।

सीता देवी हो जाती है लेकिन द्रोपदी पूज्य नहीं हो पाती.... अरी मूर्खाओं..... सत्ता हमेशा अपने स्वार्थ के लिए मूल्य गढ़ती है। सत्ता ने ही ये बताया कि यदि शूद्र वेदों का श्रवण कर लें तो उनके कानों में पिघला सीसा डाल दें.... क्यों ?

जब तक शूद्रों ने माना उन्हें सत्ता ने नर्क दिया। जब उन्होंने उसे मानने से इंकार कर दिया सत्ता ने प्रलोभन देने शुरू कर दिए। ऐसे ही स्त्रियों के साथ हो रहा है। पुरुष ने कहा सीता देवी और शूर्पणखा राक्षसी तो स्त्रियों ने मान लिया और खुद को सीता बनाने, बताने में लग गईं। भूल गईं कि सीता को आदर्श का रूप दिया गया है। आदर्श स्थापित इसलिए किए जाते हैं ताकि हम उसे पाने का प्रयास करें। लेकिन आदर्श की स्थापना की मंशा को भी समझने की कोशिश करें।

सीता का आदर्श राम के आदर्श की माँग करता है, लेकिन पुरुषों ने स्वयं को हर मापदंड से ऊपर रखा। वो अपने सहज-स्वाभाविक रूप में है, क्योंकि सत्ता उसके पास है, सारे नियम-कायदे कानून शासितों के लिए होते हैं... स्त्री का देवी रूप भी... माँ रूप का महिमा मंडन भी और स्त्री की पवित्रता-शुचिता के मापदंड भी... कौन कुलटा है और कौन सती ये भी पुरुष के ही तय किए हुए हैं। आप सिर्फ उसे मान रही हैं और उसे ही आगे बढ़ा रही है।

यदि आप सीता को देवी और शूर्पणखा को राक्षसी मानते हैं तो मानें कि आपका दिमाग भी बंधक ही है।

बंधक को साधारण भाषा में गुलाम कहा जाता है...

-अमिता नीरव

फ़हमीदा रियाज़ न भारत की थीं, न पाकिस्तान की

आशुतोष कुमार

वे अविभाजित हिन्दुस्तान की बेटी थीं. सारी उम्र वे उसी टूटे हुए देश के लिए तडपती रहीं. एक आज़ाद औरत, एक मुकम्मल इंसान, एक विद्रोही कवि. पाकिस्तान और भारत के कट्टरपंथी, तानाशाह और अंधराष्ट्रवादी उनसे सख्त नफ़रत करते थे. उनकी कालजयी नज़्म 'तुम बिलकुल हम जैसे निकले' दोनों देशों के राष्ट्र-धर्म-उन्मादियों के मुंह पर एक ऐसा तमाचा था, जिसे वे कभी भुला नहीं पाए, न भुला पाएंगे.

एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा था - तालिबान और आइ एस आइ के लोग कहानियां -कवितायेँ नहीं पढ़ते. अगर वे पढ़ते तो वे वैसे नहीं रह पाते, जैसे वे हैं. इसीलिए यह और भी ज़्यादा जरूरी है कि हम कविताएँ-कहानियां लिखते रहें. कहना न होगा कि यह बात हमारे अपने धर्म-रक्षा ब्रिगेड पर भी उतनी ही लागू होती है.

इसलिए कवितायेँ -कहानियां लिखते-पढ़ते रहिए. फ़हमीदा की रचनाएं गुनते रहिए. यह दिल्ली पर लिखी एक बेहद मार्मिक नज़्म है.

दिल्ली! तिरी छाँव बड़ी क़हरी
मिरी पूरी काया पिघल रही
मुझे गले लगा कर गली गली
धीरे से कहे'' तू कौन है री ?''

मैं कौन हूँ माँ तिरी जाई हूँ
पर भेस नए से आई हूँ
मैं रमती पहुँची अपनों तक
पर प्रीत पराई लाई हूँ

तारीख़ की घोर गुफाओं में
शायद पाए पहचान मिरी
था बीज में देस का प्यार घुला
परदेस में क्या क्या बेल चढ़ी

नस नस में लहू तो तेरा है
पर आँसू मेरे अपने हैं
होंटों पर रही तिरी बोली
पर नैन में सिंध के सपने हैं

मन माटी जमुना घाट की थी
पर समझ ज़रा उस की धड़कन
इस में कारूंझर की सिसकी
इस में हो के डालता चलतन!

तिरे आँगन मीठा कुआँ हँसे
और झपट शिकारी कुत्तों की

क्या फल पाए मिरा मन रोगी
इक रीत नगर से मोह मिरा
बसते हैं जहाँ प्यासे जोगी

तिरा मुझ से कोख का नाता है
मिरे मन की पीड़ा जान ज़रा
वो रूप दिखाऊँ तुझे कैसे
जिस पर सब तन मन वार दिया
क्या गीत हैं वो कोह-यारों के
क्या घाइल उन की बानी है
क्या लाज रंगी वो फटी चादर
जो थकी तपत ने तानी है

वो घाव घाव तन उन के
पर नस नस में अग्नी दहकी
वो बाट घिरी संगीनों से

हैं जिन के हाथ पर अँगारे
मैं उन बंजारों की चेरी
माँ उन के आगे कोस कड़े
और सर पे कड़कती दो-पहरी

मैं बंदी बाँधूँ की बांदी
वो बंदी-ख़ाने तोड़ेंगे
है जिन हाथों में हाथ दिया
सो सारी सलाख़ें मोड़ेंगे

तू सदा सुहागन हो माँ री!
मुझे अपनी तोड़ निभाना है
री दिल्ली छू कर चरण तिरे
मुझ को वापस मुड़ जाना है

200 साल पुरानी बात है...

घटना बंगाल की है .एक लड़के का लालन पालन उसकी भाभी ने किया... लड़के को पढ़ने विदेश भेजा... जब लड़का विदेश से लौटा तो पता चला कि न ही उसकी भाभी जीवित हैं और न ही बड़ा भाई....

दरसल बड़े भाई के मरने पर ढोल नगाड़ों की आवाज़ के शोर में चीख़ती चिल्लाती भाभी की आवाज़ दब गयी.... उसे घसीटते हुए मसान तक ले जाया गया और पति की जलती चिता में झोंक दिया गया.... जनाने मर्द मंत्र पढ़ रहे थे और नामर्द औरतें सती मय्या की जय का उद्घघोष...

अगले दिन सुबह जब गाँव का एक व्यक्ति शौच के लिए गया तो उसने देखा वो भाभी आधी जाली हुई नग्नअवस्था में झाडियों में छुपी हुई है.... दुबारा पूरा गाँव आया और इस बार हड्डियाँ जलती देख कर ही वापस लौटा.....

उस भाभी के देवर का नाम था राजा राम मोहन रोय.... जिसकी वजह से आज न जाने कितनी भाभियाँ जिदा हैं... हालाँकि हमारे देश में थैंक्स कहने का रिवाज है नहीं..राजाराम मोहन ने सती प्रथा को जड़ से समाप्त कर दिया

लेकिन हम जंगलियों के लिए राम मोहन रॉय किसी पैग़म्बर से कम नहीं थे... शुक्रिया राम मोहन रॉय...

- प्रो सरोज मिश्र

पाकिस्तान की प्रसिद्ध शायरा फ़हमीदा रियाज़ नहीं रहीं

भारत और पाकिस्तान के बीच अच्छे संबंध चाहने और बनाने वाले लेखकों कवियों आदि में उनका बड़ा प्रमुख स्थान था। वे दोनों देशों में बहुत लोकप्रिय थीं। विशेष रूप से उनकी कविता जो उन्होंने अटल बिहारी वाजपेई के प्रधानमंत्री बन जाने के बाद लिखी थीं काफी चर्चा में रही थी। कविता की पहली पंक्ति है- तुम बिल्कुल हम जैसे निकले, अब तक कहां छिपे थे भाई।

एक लम्हे के अंदर अंदर बहुत कुछ एक फिल्म की तरह दिमाग में घूम गया। वे सब बातें याद आने लगीं जिन्हें भूला तो नहीं था लेकिन कहीं दिमाग के किसी अंधेरे कोने में पड़ी हुई थी।

पाकिस्तान के धर्मांध तानाशाह जिया उल हक का दौर था। जो लोकतंत्र पर विश्वास करते थे या विरोधी दलों के थे, देश से भाग चुके थे या उन्हें देश निकाला मिल चुका था । फहमीदा रियाज अपने परिवार के साथ दिल्ली आ गई थीं और जामिया में उन्हें कुछ काम मिल गया था। इसी दौरान उनसे मुलाकात हुई थी और यह मुलाकात जल्दी ही दोस्ती में बदल गई थी। उनके पति जफर अली 'उज्जड' सिंधी थे और शायद सिंधी भाषा में कविता भी लिखते थे। वे बहुत पढ़े-लिखे, विद्वान और यारबाश किस्म के आदमी थे। बातचीत करने की कला में बड़े माहिर थे।

एक दिन बातचीत के दौरान फहमीदा ने कहा कि वे पूर्वी उत्तर प्रदेश के गांव देखना चाहती हैं। मैं फतेहपुर का हूँ इसलिए मैंने यह प्रस्ताव रखा कि आपको फतेहपुर के गांव दिखाए जा सकते हैं । फहमीदा रियाज फतेहपुर जाएं और कोई कवि सम्मेलन मुशायरा या उनका कविता पाठ न हो यह कैसे हो सकता था। फतेहपुर में सीपीएम के सचिव और अपने पुराने सहपाठी कॉमरेड नरोत्तम सिंह कई बार कह चुके थे कि वे फतेहपुर की तहसील बिंदकी में कवि सम्मेलन करना चाहते हैं । मैंने उन्हें सूचित किया और पूरा कार्यक्रम बन गया । यह तय पाया कि और दूसरे कवि भी साथ चलेंगे। कवि सम्मेलन के बाद सब लोग एक कामरेड के गांव जाएंगे। गांव तक कोई सड़क नहीं जाती इसलिए कुछ दूर तक टेंपो में बैठ कर नहर की पटरी-पटरी जाना होगा। फिर एक दो किलोमीटर पैदल चल कर गांव पहुंचेंगे । काफी पिछड़ा हुआ और उपेक्षित गांव है। गांव पहुंचने संबंधी सारी दिक्कतों को सुनने के बाद भी फहमीदा की गांव देखने की इच्छा कम नहीं हुई।

फहमीदा और जफर के अलावा दूसरे कवियों में मेरे ख्याल से अशोक चक्रधर, अब्दुल बिस्मिल्लाह, कृषक जी और एक दो दूसरे गीतकार, ग़ज़ल गो शामिल थे जिनके नाम याद नहीं आ रहे।

शाम के वक्त मुशायरे से पहले महफिल सज गई। सभी लोग एक मित्र के घर आ बैठे। बिंदकी के दोस्त ने बहुत आवभगत की। खाने-पीने के साथ साथ जमो-सुबू के दौर भी चलने लगे। इस दौरान लतीफे सुनाए जाने लगे। दिल्ली से मेरे साथ गए एक मित्र बहुत बढ़-चढ़कर लतीफे सुना रहे थे। उनके लतीफों पर बहुत लोग हंस रहे थे। जफर चाहते थे कि वे भी एक लतीफा सुनाएं। लेकिन दिल्ली से गए दोस्त उन्हें बार-बार रोक देते थे और एक नया लतीफा शुरू कर देते। इस महफिल में लतीफ़ा सुनाने वाले दोस्त को यह यह ख्याल नहीं रहा कि 'मज़ा लेना है पीने का तो कम कम धीरे-धीरे पी'।

जल्दी ही उनकी जल्दी बाजी ने रंग दिखाया और लतीफे सुनाते सुनाते वे कहने लगे कि उन्हें 'जामे ज़हर' पिलाया गया है- उनकी तबीयत खराब हो रही है। बिंदकी के दोस्त परेशान हो गए। फौरन एक डॉक्टर को बुलाया गया। डॉक्टर ने उन्हें देखा और कहां इन्हें आंगन में बिठा दीजिए और इनके ऊपर दो-तीन बाल्टी पानी डालिये है यही इनका इलाज है। इन्हें जहर- वहेर नहीं दिया गया।

कुछ देर के बाद वे मित्र जिन्हें संदेह था कि उन्हें जहर पिलाया गया है महफिल में आकर बैठ गए । उनके बाल भीगे और चिपके हुए थे। वे एक भीगे हुए चूहे की तरह चुपचाप बैठे थे। तब जफर ने कहा कि अब मैं एक लतीफा सुनाता हूं। कराची में हमारे एक दोस्त के पास छोटा सा प्यारा सा पप्पी नुमा कुत्ता हुआ करता था। दोस्त फर्स्ट फ्लोर पर रहते थे । नीचे गली में जब आवारा, मुस्टंडे कुत्ते लड़ते थे तो पप्पी रेलिंग पर अपने दोनों पैर रखकर भौंकता था। एक दिन पप्पी अपना बैलेंस नहीं बना पाया और आवारा, मुस्टंडे, कुत्तों के बीच गली में गिर गया। उसका क्या हाल हुआ होगा इसका सिर्फ अंदाजा लगाया जा सकता है । आज भी कुछ इसी तरह का वाक़या क्या हुआ। समझने वाले समझ गए थे कि इशारा किधर है। इस लतीफे पर बड़े ठहाके पड़े।

कवि सम्मेलन मुशायरा के बाद हम सब लोग टेंपो में लद कर भरी दोपहर में गांव पहुंचे। गांव के चौपाल पर नीम के पेड़ों के नीचे कोई दो सौ लोग बैठे थे । बताया गया कि ये लोग हम लोगों का स्वागत करने के लिए बैठे हैं और चाहते हैं कि हम उन्हें कविताएं सुनाएं। फहमीदा रियाज से कहा गया कि वे अपनी कविताएं सुनाएं तो उन्होंने बहुत महत्वपूर्ण जवाब दिया। कहा, इन लोगों के चेहरों पर सच्चाई का इतना ताप है कि मेरी कविता उसका सामना नहीं कर सकती । इसलिए मैं यहां कविता नहीं सुनाऊंगी।'

ऐसे कठिन वक्त पर अपने गीतकार मित्र काम आए और उन्होंने कुछ गीत गाए। तब कहीं जाकर गांव वालों का दिल भरा। इस दौरान फ़हमीदा गांव की औरतों के साथ घुल मिल गई और उनके घरों के अंदर जाकर कपड़े लत्ते, ज़ेवर गहने, चूल्हा चक्की, सूप- छलनी, तवा- चिमटा देखने लगीं और उनसे बात करने लगीं । कोई चार पांच घंटे हम लोग गांव में रहे और शाम होते-होते लौट आए।

कोई एक- दो साल के बाद फतेहपुर फिर गया और उन कॉमरेड से मुलाकात हुई जिनके गांव हम लोग गए थे तो कॉमरेड ने कहा कि जानते हैं कि आप लोगों के आने से गांव में क्या फर्क पड़ा ?

मैंने कहा कि हम तो सिर्फ चार-पांच घंटे गांव में रहे हैं इससे क्या फर्क पड़ा होगा ।

उन्होंने कहा, नहीं फर्क पड़ा और बहुत बड़ा फर्क पड़ा । मैं दो तीन बार ग्राम प्रधानी का चुनाव हार चुका था लेकिन इस बार जीत गया। गांव वालों ने मुझे वोट दिया और मुझसे कहा कि तुम कम से कम बाहर के लोगों को हमारे गांव में लाए तो। उन लोगों ने हमसे बात तो की । हमारे घर तो देखें । हमारी तकलीफ को तो समझा। इससे पहले तो इस गांव में बाहर का कोई कभी न आया था।'

सन 2013 में जब कराची गया था तो फ़हमीदा से मुलाकात हुई थी ।वे अपने घर ले गई थीं जहां जफर ने खुली बाहों में जकड़ लिया था। मेरे सामने वह सब आ गया था जो पाकिस्तान में बहुत दुर्लभ है। मैंने उनसे पूछा था कि यार यह तो इस्लामी मुल्क है यहां 'इसका' इंतजाम कैसे होता है ? मैंने तो यह सुना था की यहां तो लोग 'मै नोशी' के लिए जन्नत जाने का इंतजार करते हैं ।जफर हंसे थे उन्होंने कहा था कि यहां गैर मुस्लिमों के लिए दो बोतल महीने का कोटा तय है और तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि मेरे घर में सभी काम करने वाले इस क़ानून का फायदा उठा सकते हैं । मेरे ड्राइवर से लेकर खाना पकाने वाली तक इस बड़े काम में मेरी मदद करते हैं।'

कोई दो साल पहले फ़हमीदा ने अपना एक नावेल मुझे भेजा था जो पुराने ईरान यानी अग्नि पूजको के ईरान की पृष्ठभूमि में एक जननायक और उसके विद्रोह पर केंद्रित था। वे चाहती थी कि यह उपन्यास हिंदी में भी प्रकाशित हो पर अब तक हो नहीं सका है। आशा है जल्दी ही उनकी इच्छा पूरी हो जाएगी।

-असगर वजाहत